

ख

देवनागरी वर्णमाला में कवर्ग का दूसरा महाप्राण अक्षर

ख पुं. (तत्.) 1. शून्य स्थान, खाली जगह 2. बिल, छिद्र 3. आकाश 4. इंद्रिय 5. बिंदु 6. शून्य, सिफर 7. स्वर्ग, देवलोक 8. सुख 9. कर्म 10. कुंडली में जन्म लग्न से दसवाँ स्थान 11. ब्रह्मा 12. अभ्रक 13. मोक्ष, निर्वाण।

खंक वि. (तद्.) 1. दुर्बल, बलहीन 2. छूँछा, रिक्त, खाली, निर्धन, उजाड़।

खंकर पुं. (तत्.) 1. अलक, बालों की लट 2. घूँघरा।

खंख वि. (तद्.) 1. छूँछा, खाली 2. उजाड़ 3. वीरान, कंगाल, धनहीन।

खंखणा स्त्री. (तद्.) 1. घूँघरू, घंटी, नूपुर आदि की ध्वनि 2. खनन-खनन की ध्वनी करने वाली वस्तु।

खंखर वि. (तद्.) 1. मुरझाया हुआ, दुर्बल, क्षीण 2. सूखने के कारण कड़ा।

खंखर पुं. (तद्.) पलाश का वृक्ष, खखरा या खकरा।

खंग पुं. (तद्.) 1. तलवार 2. घाव, चीरा।

खंगड़ पुं. (तद्.) 1. उग्र व्यक्ति 2. उजड़ आदमी।

खंगड़ वि. (तद्.) 1. मुरझाया हुआ 2. दुर्बल, क्षीण 3. शुष्क 4. निष्क्रिय 5. सूखने के कारण कड़ा।

खंगनखार पुं. (तद्.) एक पौधा जिसे जलाकर सज्जी खार तैयार किया जाता है।

खंगर पुं. (देश.) अधिक पकने के कारण परस्पर सटी हुई कई ईंटों का चक 2. ऐसे कंकड़ जो आकार में बड़े पर वजन में कम होते हैं।

खंगर वि. (तद्.) 1. बहुत रूखा, शुष्क 2. क्षीण मुहा. खंगर लगना-सुखंडी रोग होना, दुर्बलता का रोग होना।

खंगालना स.क्रि (देश.) 1. मँजे-धुले बर्तन को पूरी सफाई के लिए फिर से धोना 2. सब कुछ उठा ले जाना 3. साफ करना 4. खाली करना 5. झाड़ू फेर देना।

खंगुवा पुं. (देश.) गेंडे का सींग।

खंज पुं. (तद्.) खंजन पक्षी वि. (तत्.) लंगड़ा, पंगु।

खंजक पुं. (देश.) पिस्ते की जाति का एक पेड़।

खंजक वि. (तत्.) लंगड़ा, पंगु।

खंजड़ी स्त्री. (देश.) डफली के ढंग का आकार में उससे छोटा एक बाजा।

खंजन पुं. (तत्.) 1. काले या मटमैले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, खडरिच।

खंजनक पुं. (तत्.) दे. खंजन।

खंजना स्त्री. (तत्.) खंजन के सदृश एक पक्षी, सरसों।

खंजनाकृति स्त्री. (तत्.) खंजन के आकार का एक पक्षी।

खंजनासन पुं. (तत्.) तंत्र के अनुसार एक प्रकार का आसन, इस आसन से उपासना करने पर विजय लाभ होता है।

खंजनिका स्त्री. (तत्.) खंजन के आकार की एक चिड़िया जो प्रायः दलदलों में रहती है, सर्षपी।

खंजर पुं. (अर.) 1. कटार, कटारी, बड़ा छुरा 2. भुजाली मुहा. खंजन तेज करना- मार डालने के लिए उद्यत होना।

खंजरीटक पुं. (तत्.) 1. खंजन पक्षी 2. एक ताल।

खंजा वि. (तत्.) 1. खंज 2. लंगड़ा। स्त्री (तत्.) एक अर्धसम वर्णिक छंद जिसके समवृत्तों में से एक वृत्त जिसमें विषम पदों में 30 लघु और अंत में एक गुरु तथा सम पदों में 28 लघु और अंत में एक गुरु होता है उदा. नरधन जग मैह